किसान खेती
वर्ष–1, अंक–1, (जनवरी–मार्च), 2014
www.kisaankheti.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© 2014 kisaankheti.com
ई-आईएसएसएन:2348-2265

जैविक खाद बनाने की विधि

हरी सिंह राठौड़ और दाना राम राईका
कृषि अनुसंधान उप केन्द्र, सुमेरपुर–306902, पाली (राजस्थान)

आज के समय में बाजार में जैविक सब्जियां, मसालें एवं अनाज की मांग लगातार बढ रही हैं क्योंकि रासायनिक खाद से तैयार सब्जियों, मसालों एवं फसलों से मनुष्य को अनेक रोग होने लगे हैं। इसी कारण आज जैविक उत्पादन की उपयोगिता बढ रही हैं।

जैविक उत्पादन प्राप्त करने हेतु सर्व प्रथम खेत में जैविक खाद की आवश्यकता पड़ती हैं। जैविक खाद बनाने हेतु किसान भाईयों के स्वयं के पास काफी मात्रा में कच्चामाल तैयार रहता हैं, परन्तु किसानों को जानकारी नहीं होने के कारण वे अपने बहुमुल्य उत्पाद जैसे गोबर, पशुओं के चारे का अवशेष, पेड़ों की पत्तियां आदि जलानें के काम में ले लेते हैं। जब कि इन्ही से वे थोड़ी मेहनत कर अच्छी जैविक खाद तैयार कर सकते हैं।

जैविक खाद अपनाने के लाभ :

1. भूमि का उपजाऊपन बढता हैं।
2. भूमि में अधिक समय तक नमी बनी रहती हैं।
3. भूमि में वायु संचार लगातार होता रहता हैं।
4. धीरे–धीरे भूमि की किस्म में सुधार होता रहता हैं।
5. अधिक उत्पादन प्राप्त होता हैं।
6. उत्पादन लागत कम आती हैं।
7. जैविक उत्पादन का बाजार में अधिक मूल्य प्राप्त होता हैं।

जैविक खाद के प्रकार :

1. कम्पोस्ट खाद।
2. वर्मी कम्पोस्ट।

कम्पोस्ट खाद तैयार करना :

कम्पोस्ट खाद तैयार करने के लिये सर्वप्रथम किसान अपने खेत में एक जगह पर 10X6X3 फीट के आकार के तीन खड्डे जमीन में खोद कर तैयार कर लेवें। तैयार खड्डों में फसलों के अवशेष, पशुओं का गोबर व आस पास के नीम आदि पेड़ों की पत्तियों को परतवार भर कर उस पर पानी छिडक कर गिला कर देंवे तथा जब खड्डा पूरा भर जावें तब उसको घास फूस आदि से उपर से ढक लेवें, तांकि खड्डें में नमी बनी रहें तथा घूप से खाद के पोषक तत्व नष्ट नहीं होवें। 3–4 माह में खाद सड़कर खेत में डालने हेतु तैयार हो जाता हैं। इस प्रकार क्रम से साल भर में तीनों खड्डों को भर कर कम्पोस्ट तैयार किया जा सकता हैं। इस प्रकार तैयार खाद में प्रयुक्त कृषि अवशेषों की प्रकृति के अनुसार 0.5–1.5 प्रतिशत नत्रजन, 0.5–2.0 प्रतिशत फॉसफोरस एवं 0.5–1.5 प्रतिशत पोटाश की प्राप्ती होती हैं। तैयार खाद को खेत बुवाई से 2–4 सप्ताह पूर्व 10–15 क्विंटल प्रति हैक्टर की दर से डाली जा सकती है।

वर्मी कम्पोस्ट तैयार करना :

वर्मी कम्पोस्ट खाद तैयार करने के लियें किसान अपने खेत पर समतल जगह पर इटों से 10–15 फीट लम्बी, आधा फीट ऊची व 3 फीट चौडी क्यारियां बना लेवें। इन क्यारियों में फसल के अवशेषों की 3'' मोटी परत डालें, फिर इनके उपर 10–15 दिन पुरानी गोबर की खाद, फसल के अवशेष आदि की करीब 12'' मोटी परत डालें। फिर इनको पानी से गीला कर देवें। इनके उपर तैयार वर्मी कम्पोस्ट, जिसमें केचुऐं एवं इनके अण्डें आदि होते हैं, की 1'' की परत डालें। प्रति वर्ग मीटर में करीब 1000 केचुऐं होंने चाहियें। हलका पानी छिडक कर पुराने टाट की बोरियों से ढक देवें। प्लास्टीक को बिल्कुल काम में नहीं लेना चाहियें। नमी करीब 70 प्रतिशत तक बनी रहनी चाहियें। साथ ही क्यारियों पर छाया का उचित प्रबन्ध हेतु घास–फूस का एक छप्पर बनाना चाहियें, तांकि तेज धुप के कारण केचुओं को हानि नहीं पहुचेगी। इस प्रकार यह खाद 2–3 माह में तैयार हो जाती हैं। इस खाद को छलनी से छान कर उसमें से केचुऐं अलग कर लेने चाहियें। छनी खाद को फसलों में बुवाई के साथ या बुवाई के बाद आवश्यकतानुसार 2–2.5 क्विंटल प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग में ली जा सकती हैं। इस प्रकार तैयार खाद में प्रयुक्त सामग्री के अनुसार 1.5 – 2.5 प्रतिशत नत्रजन, 1.5–2.25 प्रतिशत फॉसफोरस एवं 1.5 प्रतिशत पोटाश की प्राप्ती होती हैं।

इस प्रकार जैविक खाद तैयार कर किसान अपने खेत से अच्छी गुणवत्ता वाले कृषि उत्पाद प्राप्त कर अधिक मुनाफा कमा सकते हैं।